रसूलुल्लाहﷺ की दावत क्या थी?

मौलाना जलील अहसन नदवी रह. राहे अमल हिन्दी.

‘नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.’

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

{1} बुखारी की रिवायत का खुलासा:- हज़रत इबने अब्बास (रदी) से रिवायत है हरकल ने हज़रत हज़रत अबू सुफियान से पूछा, ये आदमी (हज़रत मुहम्मदﷺ) तुमसे क्या कहता है? हज़रत हज़रत अबू सुफियान ने जवाब दिया की ये आदमी हमसे कहता है की अल्लाह की बन्दगी करो और इकतिदार व फरमारवाई मै किसीको शरीक ना ठहराओ और तुम्हारे बाप दादा का जो अकीदा था और जो कुछ करते थे उसे छोड दो, और ये शख्स हमसे कहता है की नमाज़ पढो, सच्चाई अपनाओ, पाकी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारो और सिलारहमी करो (यानी रिश्तेदारों का खयाल रखो).

ये एक लम्बी हदीस का टुकडा है जो हदीस हरकल के नाम

से मशहर है उस्का खुलासा:- ये है की रूम का बादशाह हरकल बैतुल मकदिस मै था की रसूलुल्लाहﷺ का दावती खत उस्को मिला, तब उस्को तलाश हुई की कोई शख्स मिले और उस्से जानकारी हासिल करे, इत्तिफाक से हज़रत हज़रत अबू सुफियान और उन्के कुछ साथी मिल गये हरकल ने उन्से बहुत से सवालात किये जिन मै एक सवाल ये था की इस नबी की दावत की बुनियादी बातें बताओ हज़रत अबू सुफियान ने बताया की वो तौहीद की शिक्षा देता है कहता है की सिर्फ एक अल्लाह को मानो, सिर्फ वही है जिस्की हुकूमत आसमानों और जमीन पर है, उपर की दुनिया का भी वही इन्तिज़ाम करता है और इस जमीन का इन्तिज़ाम भी उसीके हाथ मै है, हुकूमत और इन्तिजाम (प्रबन्ध) मै ना तो किसीको उसने साझी बनाया है और ना ही कोई अपने जोर व असर से साझी बन सकता है, और जब ऐसा है तो सज्दा सिर्फ उसीके लिए होना चाहिए हर तरह की मुश्किलों मै सिर्फ उसीसे मदद माँगनी चाहिए, उसीसे मुहब्बत होनी चाहिए, और उसीकी उपासना (इताअत) होनी चाहिए. बाप दादा ने शिर्क की बुनियाद पर ज़िन्दगी गुज़ारने का जो निज़ाम बनाया है उसे

छोड देना चाहिए. इसी तरह वो हमसे कहता है की नमाज़ पढो और सच्चाई अपनाओ, कहने मै भी और करने मै भी. और इज़्ज़त व पवित्रता को हाथ से ना जाने दो, ऐसे काम ना करो जो इन्सानियत के खिलाफ है, और भाईयों के साथ अच्छा सुलूक करो सब एक माँ बाप की औलाद है और सब एक दूसरे के हकीकी भाई है.

{2} मुस्लिम व रियाजुस्सालिहीन की रिवायत का खुलासा:- हज़रत अमर बिन अबसा (रदी) से रिवायत है की मै रसूलुल्लाहﷺ के पास मक्का मै आपकी नुबुव्वत के शुरूआती ज़माने मै गया, मैने पूछा की आपﷺ क्या है? आपﷺ ने फरमाया- की मै नबी हूं, मैने कहा की नबी क्या होता है? आपﷺ ने फरमाया- मुझे अल्लाह तआला ने अपना रसूल (सफीर) बनाकर भेजा है. मैने पूछा क्या संदेश देकर उसने आपको भेजा है? आपﷺ ने फरमाया- मुझे अल्लाह तआला ने इस गर्ज़ से भेजा है की मै लोगों को सिलारहमी की शिक्षा दूँ और मुर्तियों की पूजा करनी बन्द कर दी जाए, और अल्लाह की तौहीद को अपनाया जाए और उस्के साथ किसीको शरीक

ना किया जाए.

ये हदीस भी नबी की दावत की बुनियादी बातें बताती है, आपﷺ ने अपनी दावत को थोडे से शब्दों मै समेट कर बयान फरमा दिया की मेरी दावत ये है की अल्लाह और बन्दों के संबंध को सही बुनियादों पर कायम किया जाए, बन्दे और अल्लाह के तअल्लुक की सही बुनियाद तौहीद है यानी अल्लाह की हुकूमत मै किसीको शरीक ना किया जाए और सिर्फ उसीकी इबादत की जाए, सिर्फ उसीकी उपासना की जाए और इन्सानों के बीच सही तअल्लुक (संबंध) की बुनियाद बराबरी और एक दूसरे के साथ हमदर्दी की है यानी ये की तमाम इन्सान एक माँ-बाप की औलाद है और वास्तव मै ये सब आपस मै भाई-भाई है, तो उन्को एक दूसरे से मुहब्बत होनी चाहिए और उन्के दुख दर्द मै उन्का हाथ बटाना चाहिए बेसहारा और लाचार भाईयों की मदद करनी चाहिए. किसी पर जुल्म हो रहा हो तो सब्को ज़ालिम के खिलाफ उठ खडा होना चाहिए कोई अचानक किसी आफत के चक्कर मै आ-जाए तो हर एक के दिल मै टेस उठनी चाहिए, और उस्को आफत से निकालने के लिए दौड पडना चाहिए.

ये दो बनियादे है अंबियाई दावत की, एक वहदत ए इलाह यानी तौहीद, दूसरी वहदत ए बनी आदम, यानी रहमत ए आम्मा, यहां ये बात सामने रखनी है की असल चीज़ तो तौहीद है, और दूसरी बुनियाद तो तौहीद का लाजिमी तकाज़ा है. जो अल्लाह से मुहब्बत करेगा वो उस्के बन्दों से भी मुहब्बत करेगा क्योंकि अल्लाह ने बन्दों से मुहब्बत करने का हुक्म दिया है.

बन्दों की मुहब्बत व खैरख्वाही के जहा और बहुत से तकाज़े है वहा एक तकाजा वो भी है जिसे ईरानी सिपहसालार के सामने हज़रत मुगीरा बिन शुअबा (रदी) ने इस्लामी दावत का मतलब और नबियों के भेजे जान का मकसद बताते हुए बयान किया था, उन्हों ने ईरानी सिपहसालार की गलतफहमी दूर करते हुए कहा की “हम ताजिर लोग नहीं है, हमारा मकसद अपने लिए नई मंडियां तलाश करना नहीं है, हमारा मकसद दुनिया हासिल करना नहीं है, हमारा मकसद आखिरत को हासिल करना है हम सच्चे धर्म के मानने वाले है और उसीकी दावत देना हमारा मकसद है” इस्पर उसने कहा की वो सच्चा धर्म क्या है उस्का परिचय कराओ तो हज़रत मुगीरा (रदी) ने

फरमाया- तरजुमा- हमारे दीन की बुनियाद और मरकजी नुकता जिस्के बगैर इस दीन का कोई जुज़ अच्छी हालत मै नहीं रह सकता, ये है की आदमी गवाही दे की अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं है (यानी तौहीद) और ये की हज़रत मुहम्मदﷺ अल्लाह के रसूल है (यानी रिसालत) और ये की अल्लाह की तरफ से आए हुए कानून (कुरआन) को अपनाये.

ईरानी सिपहसालार ने कहा, ये तो बहुत अच्छी शिक्षा है क्या इस धर्म की और भी शिक्षा है? हज़रत मुगीरा ने कहा हां इस दीन की तालीम ये भी है की इन्सान को इन्सान की बन्दगी से निकाल कर अल्लाह की बन्दगी मै दाखिल किया जाए.

ईरानी सिपहसालार ने कहा ये भी अच्छी शिक्षा है, क्या और भी कुछ ये धर्म कहता है? हज़रत मुगीरा (रदी) ने फरमाया- इस धर्म की शिक्षा ये भी है की तमाम इन्सान आदम की औलाद है और सब आपस मै हकीकी भाई है. ये है सच्चे धर्म की बुनियादी दावत जिस्को सिपहसालार रूसतम के सामने हज़रत मुगीरा (रदी) ने पेश किया और उसी सिपहसालार के सामने इसी मजलिस मै हजरत रिबई बिन आमिर ने इस्लाम

का मतलब इन शब्दों मै बयान किया (अल-बिदाया वन्निहाया, जिल्द 7/39) अल्लाह ने हम को ये काम सौंप दिया है की जो लोग चाहें हम उन्को इन्सानों की बन्दगी से निकालें और अल्लाह की बन्दगी मै दाखिल करें और तंग दुनिया से निकाल कर वसीअ दुनिया मै लाए और ज़िन्दगी के ज़ालिमाना निज़ाम से निकाल कर इस्लाम के अदल व इन्साफ के साया मै लाए. अल्लाह ने हमें अपना दीन दे कर इन्सानों के पास भेजा है ताकि उन्हें अल्लाह के दीन की तरफ बुलाए.